मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 56 अंक 11 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
नवम्बर 2020 बहाई वर्ष : 177

विश्व न्याय मन्दिर

"बहाउल्लाह के प्रकटीकरण द्वारा मन में बैठाया गया आचरण का उच्च स्तर किसी समझौते को स्वीकार नहीं कर सकता; इसे कदापि गिराया नहीं जा सकता और सभी को इसकी उत्कृष्ट ऊँचाइयों पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करनी चाहिये; दूसरी ओर यह स्वीकार किया जाना चाहिये कि मनुष्य होने के नाते हम पूर्णता से बहुत दूर हैं; सभी से जो अपेक्षित है वह है सच्चा दैनिक प्रयास। दंभ से दूर करने की आवश्यकता है।"

–28 दिसम्बर 2010

बहाउल्लाह और बाब का जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

• स्थानीय आध्यात्मिक सभा जयपुर की ओर से शनिवार को बहाई धर्म के संस्थापक 'बहाउल्लाह' का 203 वां और बहाई धर्म के अग्रदूत 'दिव्यात्मा बाब' का 201 वां जन्म दिवस वर्चुअल रूप से मनाया गया।

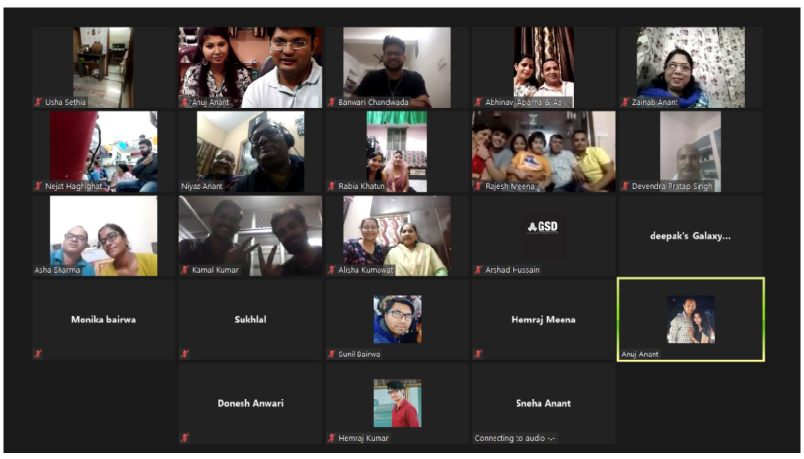
इस अवसर पर अनुयायियों द्वारा विभिन्न भाषाओं में प्रार्थना कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई।

मुख्य वक्ता ने युगल अवतारों के इस पावन पर्व की सभी को शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए बताया कि ग्रिगेरियन कैलेंडर के हिसाब से 'बहाउल्लाह' जिनका जन्म 12 नवंबर 1817 को तत्कालीन फारस की राजधानी तेहरान व अग्रदूत 'दिव्यात्मा बाब' का जन्म 20 अक्टूबर 1819 को फारस के शीराज नामक नगर में हुआ था। लेकिन वर्तमान समय में बहाई धर्म के बदी कैलेंडर लागू होने के बाद युगल अवतारों का जन्मदिवस इसी के मुताबिक मनाया जाता है।

यह युग इसलिए भी बहुत महत्वपूर्ण है कि इस युग में एक साथ दो ईश्वरीयावतारों का आगमन हुआ है। 'बहाउल्लाह' का उस समय फारस में प्रकटीकरण हुआ जब फारस के लोग उस प्रतिज्ञापित की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह एक कुलीन परिवार से संबंध रखते थे उनके पिता राजा के दरबार में मंत्री थे, लेकिन उन्होंने यह सब कुछ छोड़ कर मानवजाति की सेवा में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

वही 'दिव्यात्मा बाब' भी एक संपन्न परिवार से संबंध रखते थे। 'दिव्यात्मा बाब' जिनका की शाब्दिक अर्थ द्वार अथवा दरवाजा होता है वह दरवाजा जिससे एक नये धर्म का आगमन होगा जो संपूर्ण मानवजाति को एकता के सूत्र में पिरोते हुए एक नई विश्व व्यवस्था की नींव रखेगा।

रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान अनुयायियों में खासा उत्साह देखते ही बन रहा था और उत्सव का आनंद दोगुना हो गया।



जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी

• मध्य प्रदेश के समुदायसमूहों –भोपाल, इंदौर, सुसैरा, खरगौन, शाजापुर, ग्वालियर आदि में हर्षोल्लास के साथ बाब और बहाउल्लाह के जन्मोत्सव का समारोह मनाया गया। भोपाल में रंगारंग कार्यक्रम के साथ बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जबकि भोपाल के

शेष पृष्ठ 3 पर

इस अंक में

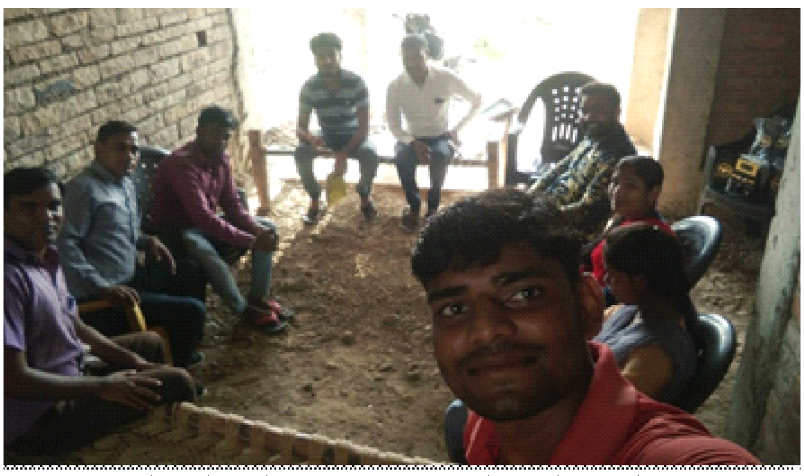
मध्यप्रदेश में आयोजित कार्यक्रम

• परिषद द्वारा आयोजित संस्थागत बैठक में बनायी गयी सुसैरा के पडोसी समुदाय मुरार की योजना के अनुसार निर्धारित मित्रों की टीम द्वारा भदरौली गांव में भ्रमण किया गया, जहां पर रहने वाले पुराने बहाई मित्रों से उन्होंने मुलाकात की और भदरौली गांव में प्रभुधर्म के विकास एवं गतिविधियों की शुरूआत करने के बारे में गहन परामर्श किया। इसके उपरांत पता चला कि वहां पर पिछले कुछ वर्षों पूर्व नियमित रूप से स्थानीय आध्यात्मिक सभा का चुनाव किया जाता था और सभा के सहयोग से वहां पर नियमित उन्नीस दिवसीय सहभोज के साथ–साथ प्रभुधर्म की अन्य बहाई गतिविधियों को संचालित किया जाता था, परन्तु कुछ वर्षों से इस गांव में गतिविधियों का विस्तार नहीं हो रहा है। मित्रों द्वारा वहां के कुछ युवाओं के साथ संस्थान प्रक्रिया के संबंध में गहन परामर्श किया गया और उनको रूही पुस्तक–एक के अध्ययन के लिये आमंत्रित किया गया। इस प्रकार मुरार क्लस्टर में एक अध्ययनवृत कक्षा की शुरूआत 12 स्थानीय मित्रों के साथ हो चुकी है।



ग्वालियर में आयोजित कक्षाओं में भाग लेने वाले बच्चे

• ग्वालियर समुदाय में स्थानीय सभा के सहयोग से समुदाय की अन्य संस्थाओं के साथ परामर्श उपरांत लॉकडाउन के समय में भी कई प्रकार की गतिविधियों को ऑनलाइन सुविधा के अनुसार समुदाय के मित्रों के लिये शुरू किया गया, जिसमें समुदाय के कई युवा मित्रों द्वारा पूरा सहयोग किया गया।



सुसैरा के पड़ोसी समुदाय मुरार में आयोजित बैठक

यहां पर बहाई त्योहारों को

शेष पृष्ठ 4 पर

महाराष्ट्र की गतिविधियाँ

• **पचौरा क्लस्टर** : मालेगाँव से चार सदस्यों की एक यूनिट टीम ने इस क्लस्टर को खोलने के लिये योजना बनाई और तैयारियाँ कीं। वहाँ पहुँचने के बाद, सबसे पहले वे कुछ ऑटो ड्राइवर से मिले जिनसे उन्हें आस पास के गाँवों के बारे में कुछ जानकारी मिली। टीम ने भ्रमण करना शुरू किया। इस दौरान वे स्थानीय अधिकारियों, युवाओं के समूह तथा परिवारों से मिले। कुल मिलाकर, वे तीन गाँवों और तीन शहरों में भ्रमण कर पाये, जिनमें एक था पुनगाँव और एक था शिवाजी नगर।

परिवारों को भक्तिपरक बैठक आयोजन करने के विषय से परिचित करवाया गया। टीम ने 31 युवा प्रतिभागियों के साथ एक अभियान का आयोजन किया, जिनमें से 20 ने रूही पुस्तक–3 और 11 ने रूही पुस्तक–5 का अध्ययन पूर्ण किया। टीम द्वारा किये गये निरंतर भ्रमण और अर्थपूर्ण वार्तालापों के परिणामस्वरूप 101 बच्चे और 54 किशोरों को चिह्नित किया गया, उन्हें 10 बच्चों की कक्षाएँ और 6 किशोर कक्षाओं में जुड़ने के लिये आमंत्रित किया गया। टीम ने परिवारों के साथ अच्छे संबंध बनाये और उनके द्वारा मनाये गये त्यौहार में भी उन्होंने भागीदारी निभायी। जिस दिन अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया था, भारी वर्षा होने के बावजूद सभी माता–पिता उपस्थित हुए।

इसके अलावा, अभियान के चार प्रतिभागियों को 11 प्रतिभागियों के साथ रूही पुस्तक–2 के 2 स्टडी सर्कल शुरू करने के लिये सहायता की गया। इन सभी प्रयासों का परिणाम यह था कि पचौरा, एक ऐसा क्लस्टर जिसमें कोई गतिविधियाँ नहीं थीं, अब दूसरे मील के पत्थर पर पहुँच गया। बहाउल्लाह द्वारा बरसाई गईं दिव्य सम्पुष्टियों के लिये कृतज्ञता से भरे हृदयों के साथ टीम वापस लौट गई।

Û **येवला क्लस्टर** : पाँच सदस्यों की एक टीम ने इस क्लस्टर में भ्रमण किया जो एक ऐसे चरण में है जहाँ प्रक्रिया की शुरुआत हो चुकी है। कोविड–19 के संक्रमण से बचाव संबंधित पूरी सावधानी ध्यान में रखते हुए वे अपने मिशन पर निकले। उन्होंने अपने साथ ज़रूरत पढ़ने वाली सभी पुस्तकें और सामग्रियाँ ली। शुरू में उन्होंने शहरी भाग में भ्रमण किया, मगर उन्हें कोई अच्छा प्रत्युत्तर नहीं मिला। फिर उन्होंने ज़िले के गाँवों में भ्रमण करने का निर्णय लिया।

प्रत्येक गाँव में वे सबसे पहले सरपंच से जाकर मिले, जिनके साथ उन्होंने भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति के विषय पर बातें सांझ कीं। कुछ जगहों में, महामारी संबंधित लगाये गये प्रतिबंध के कारण वे अभियान का आयोजन नहीं कर सकें। फिर भी, जहाँ भी वे गये, वहाँ उन्होंने कई नौजवानों और परिवारों के साथ अर्थपूर्ण वार्तालाप स्थापित की।

कुल मिलाकर, यह टीम 16 गाँवों तक पहुँच सकी। भ्रमण किये गये लगभग प्रत्येक गाँव में, वे स्टडी सर्कल में प्रतिभागियों को शामिल कर पाये और काफी अच्छी संख्या में मूल–गतिविधियाँ शुरू की गईं। साथ ही, उन्होंने कुछ क्षमतावान लोगों को प्रशिक्षित किया और अध्ययनवृत्त कक्षा शुरू करने के लिये उनकी सहायता की। इसके अलावा एक समीक्षा बैठक का भी आयोजन किया गया, जिसमें 50 लोगों ने भाग लिया। इन सभी सघन और केंद्रित प्रयासों से यह क्लस्टर दूसरे मील के पत्थर तक पहुँचने में सफल हो पाया।



येवला क्लस्टर में आयोजित सामुदायिक सम्मेलन

झारखण्ड में आयोजित कार्यक्रमों की झलक

• जमशेदपुर स्थित बहाई केंद्र में 5 अक्टूबर 2020 को राज्य स्तर पर बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय आध्यात्मिक सभा जमशेदपुर के सदस्यों को मिलकर 26 मित्र शामिल हुए। बैठक में बहाई चुनाव की पवित्रता एवं परिषद् द्वारा तैयार की गयी चुनाव संबंधी परिपत्र का अध्ययन किया गया। साथ ही, जमशेदपुर की सीखों एवं समुदाय में संचालित गतिविधियों का मूल्यांकन करते हुए एक योजना तैयार की गयी, जिसमें गतिविधियों का पुनः संचालन सम्मिलित था। साथ ही पूरी गोपनीयता को अपनाते हुए स्थानीय आध्यात्मिक सभा के पूरे सदस्यो द्वारा आध्यात्मिक वातावरण में मतदान किया गया।

• जैसे जैसे परिस्थितियाँ अनुकूल हो रही हैं। वैसे वैसे समुदाय की बंद पड़ी गतिविधियाँ भी अपना मूल अस्तित्व प्राप्त कर रही हैं। मित्रों का आवागमन एक समुदायों से दूसरे समुदायों में संभव होने लगा है। कई समुदायों पर शिक्षक, अनुप्रेरको, सह–शिक्षको के साथ पुनः रूही पुस्तक 3, 5 एवं 7 के आंशिक भागों का अध्ययन शुरू किया गया, जिससे पुनः उनमें वो ताजगी और उत्साह लाया जाये। कई मित्रों ने अन्य बहाई पुस्तकों में भी अपनी रूचि दिखाते हुए बैठको एवं ऑनलाइन के माध्यम से अध्ययन शुरू किया। परिवारों एवं समुदायों में पवित्र शब्दों की गूँज गूँजने लगी है, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हुआ है।

• सितंबर 2020 में झारखंड में स्थित तामाड़ क्लस्टर तीसरे मील पर पहुंच गया। यह क्लस्टर रांची से 25 किलोमीटर और जमशेदपुर से 100 किलोमीटर दूर है। इसकी पहचान मई 2015 में हुई थी और इस क्लस्टर ने 2017 में द्वि–शताब्दी के समय प्रथम मील को और 2018 में दूसरे मील को प्राप्त किया था। इस क्लस्टर में क्रमशः– बच्चों की कक्षायें–9/9/65, किशोर समूह – 7/6/47, स्टडी सर्कल – 2/3/13, भक्तिपरक बैठकें – 110/400 गतिविधियां चार समुदायों में संचालित की जा रही है। रायडीह समुदाय सघन गतिविधियों का केंद्र है जहाँ लगभग 80 प्रतिशत गतिविधियां संचालित की जा रही है। इस समुदाय में 6 मित्रो का एक दल है जो समय समय पर मिलकर परामर्श करते हुए योजना बनाते है और कार्य करते हैं। यहाँ की संस्थायें एवं एजेंसियाँ भी अब अपने मूल कर्त्तव्यों को समझते हुए कार्य कर रही हैं। तथा वर्तमान में अभी यहाँ 3 ग्रुप ऑफ फैमिली हैं और इस क्लस्टर में वयस्क बहाइयों की संख्या लगभग 45 है।



जमशेदपुर में आयोजित राज्य स्तरीय बैठक



रांची में आयोजित किशोर समूह के प्रतिभागी

बहाउल्लाह और बाब का जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

पृष्ठ 1 का शेष

कई बहाई परिवारों ने जन्मोत्सव अपने–अपने घरों में ही मनाया।

कोरोना महामारी के कारण सरकार द्वारा जारी दिशानिर्देशों का पालन करते हुए कार्यक्रम में कम लोगों को ही आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ कई समूह गान की प्रार्थनाओं से हुआ, इसके साथ ही, जन्मोत्सव की विशेष प्रार्थना का पाठ किया गया। कार्यक्रम में जहाँ रंगारंग प्रस्तुतियां दी गईं, वहीं बच्चों व किशोरों की कक्षा ले रहे शिक्षकों व अनुप्रेरकों ने उपस्थित मित्रों के साथ अपने–अपने अनुभव साझा किए।



भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वाले मित्रगण

दिव्यात्मा बाब व बहाउल्लाह के जीवन पर प्रकाश डालते हुए स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सचिव ने सामान्य–सी प्रश्नोत्तरी कर कार्यक्रम को और अधिक रोचक बना दिया। एक अन्य मित्र द्वारा मानवजाति की सेवा के लिये मित्रों का आह्वान किया गया। कार्यक्रम के समापन पर कोरोना महामारी से मुक्ति व मानवजाति की एकता व शान्ति के लिए विशेष प्रार्थना की गई।



इंदौर में आयोजित किए गए उत्सव में शामिल मित्रगण

• झारखण्ड में भी दिव्यात्मा बाब का 201वां और युगावतार बहाउल्लाह का 203वां जन्मोत्सव बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कोविड महामारी के कारण संसार में व्याप्त इन विषम परिस्थितियों में भी समुदायों एवं मित्रों ने सभी की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पूरी सावधानियों को अपनाते हुए उत्सव का आयोजन किया। राज्य में लगभग 10 क्लस्टरों के 13 समुदायों के 18 गली एवं मोहल्ले में उत्सव मनाया गया। इनमें से 7 सामुदायिक स्तर पर जिसमें समुदाय के लगभग सभी मित्र शामिल हुए थे। 223 पारिवारिक स्तर पर जहाँ परिवार के ही मित्रों ने मिलकर उत्सव मनाया एवं 24 पारिवारिक समूह के स्तर पर जिसमें कुछ परिवारों के समूहों ने मिलकर उत्सव मनाया। राज्य में लगभग उत्सव में 1239 प्रतिभागी शामिल हुए।





झारखण्ड के आसनबनी और पटमदा के बारूबेरा समुदाय में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वाले लोग

उत्सव में मित्रों ने बाब और बहाउल्लाह की जीवनी, गीत–संगीत, अनुभव एवं परिषद द्वारा विशेष कर उत्सव हेतु तैयार की गयी। बाब और बहाउल्लाह की जीवनी एवं शिक्षाओं से सम्बंधित परिपत्र का सामूहिक अध्ययन किया गया। इस परिपत्र ने मित्रों को और स्पष्टता प्रदान की। कई जिज्ञासुओं ने भी अपने अनुभव को साझा किया। कई स्थानों पर रंगोली एवं पोस्टरों के माध्यम से सन्देश दिया गया। परिस्थिति को देखते हुए सघन गतिविधियों वाले समुदायों में ही सम्मेलनों का आयोजन किया गया। उत्सव के दौरान स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया और उत्सव का आयोजन किया। आसनबनी समुदाय में उत्सव पर सफाई कार्य भी किया गया।

निवेदन

प्रिय मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें बहाई समाचार में प्रकाशित कर सकें।

धन्यवाद !

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 | Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
New Delhi P.S.O. | Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के संबंध में बहाउल्लाह का विधान

बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के विधानों का सिंहावलोकन और इनकी उपयुक्तता

बहाई विधान के विपरीत अंत्येष्टि–क्रिया अथवा मृतक के सम्बन्धियों द्वारा बहाई विधान का विरोध किया जाना

अनेक विचार हैं जो ऐसे मामलों में प्रासंगिक हैं जब ग़ैरबहाई परिवार के सदस्य बहाई अंत्येष्टि के महत्व को नहीं समझ पाते हैं। एक सवाल वैधानिक है कि यह निर्णय लेने का अधिकार किसका है कि मृतक के शरीर का क्या किया जाना चाहिये। एक देश से दूसरे देश में यह भिन्न हो सकते हैं और नागरिक कानून बराबर मृतक की इच्छाओं को ध्यान में रख कर ही बनाये जायें, यह भी आवश्यक नहीं है। इसलिये, ग़ैरबहाई परिवार के सदस्यों के साथ रहने वाले एक बहाई के लिये यह सम्भव नहीं भी हो सकता है कि वह यह सुनिश्चित कर सके कि उसकी मृत्यु के बाद उसके शरीर का क्या किया जाये। हाँ, यह सम्भव है कि अनुयायी अपने परिवार के सदस्यों को यह बतलाये कि उसकी इच्छा क्या है और यह स्पष्ट कर दे कि उसका अंतिम संस्कार बहाई विधान के अनुसार किया जाये। इसमें लिखित निर्देश हो सकता है। वह यह भी कोशिश कर सकता है कि वह अपने ग़ैरबहाई परिवार के सदस्यों को इस सम्बन्ध में समुचित जानकारी दे और अत्यन्त प्रेम तथा विनम्रता के साथ उनसे कहे कि प्रभुधर्म के विधानों को वह कितना महत्व देता है और उन्हें यह समझाने में सफल हो कि बहाई सिद्धांतों के आध्यात्मिक महत्व क्या है। आपके देश के अनुयायियों को इस सम्बन्ध में बेझिझक परामर्श करना चाहिये और ऐसे प्रयासों के लिये बहाई संस्थाओं की मदद लेनी चाहिये। अगर अनुयायी की मृत्यु के बाद मृतक के गैर बहाई सम्बन्धी अत्येष्टि से सम्बन्धित बहाई विधान का अनुपालन नहीं करना चाहते हैं तो इसे कोई मुद्दा नहीं बना लेना चाहिये।

(विश्व न्याय मंदिर की ओर से राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 14 फरवरी 2016 को लिखे गये पत्र से)

दाह संस्कार

वह सोचते हैं कि अब्दुल बहा ने दाह संस्कार के विरोध में जो कहा है, उसके आलोक में, अनुयायियों को अपनी आस्था के चिहन्स्वरूप ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये जो उनके पार्थिव शरीर के दाह संस्कार का कड़ा विरोध वे कर सके। 'अक़दस' में बहाउल्लाह ने इसे एक विधान के रूप में स्थापित किया है और यह इतना सुन्दर, इतना समुचित है, इतना सम्मानजनक है कि किसी भी अनुयायी को स्वयं को इससे वंचित नहीं रखना चाहिये।

(शोगी एफेंदी की ओर से एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 7 जुलाई, 1947 को लिखे गये एक पत्र से)

क्रमशः

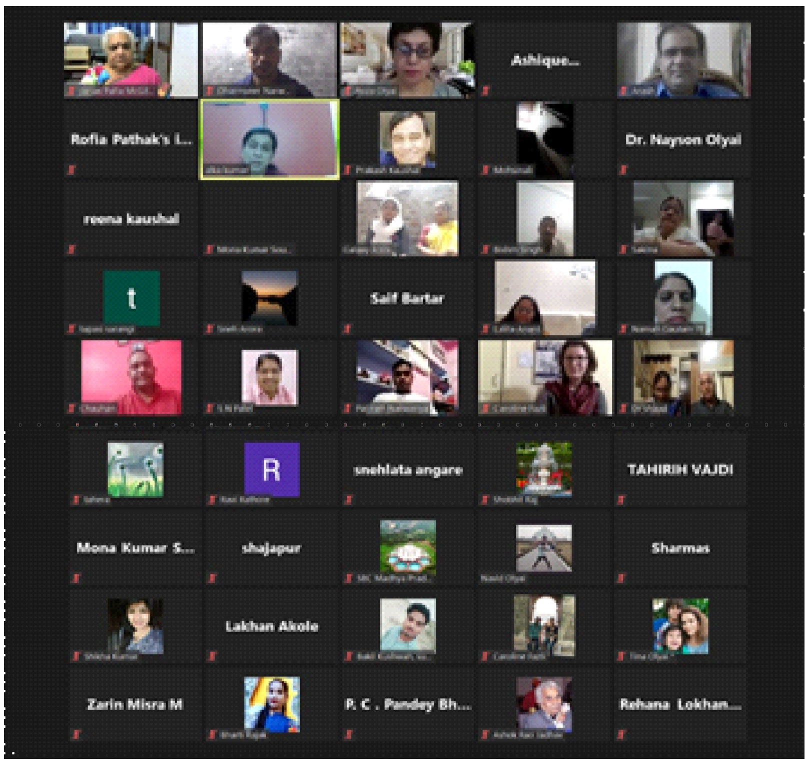
मध्यप्रदेश में आयोजित कार्यक्रम

पृष्ठ 1 का शेष

मनाने का सिलसिला भी ऑनलाइन सुविधा के माध्यम से बहुत ही उत्साह और प्रेम के साथ मनाया गया। मित्रों के लगातार प्रयास से ग्वालियर समुदाय में रूही पुस्तकों का अध्ययन एवं कई प्रकार के दृढ़ीकरण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। प्रत्येक दिन, यहां पर रात के समय एक प्रार्थना सभा का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें समुदाय के मित्रों के साथ अन्य बहाई मित्र भी भाग लेते हैं। रूही पुस्तक–1 के नये प्रकाशन का अध्ययन भी यहां पर कुछ मित्रों के साथ शुरू किया गया है जो नियमित रूप से चल रहा है।

इन्द्रमणी नगर में एक बहाई द्वारा बच्चों की बहाई बाल नैतिक कक्षा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें सभी बच्चे बड़े ही उत्साह के साथ भाग लेते हैं।

• राज्य बहाई परिषद मध्यप्रदेश द्वारा 3 अक्टूबर 2020 को शाम 8 बजे एक मेमोरियल प्रार्थना सभा का आयोजन किया, जिसमें प्रदेश से 70 से अधिक मित्रों ने भाग लेकर, हाल ही में आभा सौन्दर्य को प्रयाण कर गये हमारे विश्व न्याय मंदिर के पूर्व सदस्य श्री डगलस मार्टिन, श्री फरजाम अरबाब एवं अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र की पूर्व सदस्या सुश्री वायलेट हक के लिये पूरे प्रदेश के बहाई समुदाय ने मिलकर, ईश्वर के अनंत लोक की ओर प्रयाण कर गईं उनकी दैदीप्यमान आत्माओं की प्रगति के लिये प्रार्थनायें कीं ताकि उन प्रिय मित्रों की आत्माओं का आभा साम्राज्य में आनंदपूर्वक स्वागत हो और उनकी प्रकाशित आत्मा उस असीम उच्च लोक में सदैव उड़ान भरती रहे। प्रार्थना के दौरान विश्व न्याय मंदिर से प्राप्त इन मित्रों की सेवाओं को समर्पित प्रपत्रों का अध्ययन किया गया। कार्यक्रम के शुरूआत में इन तीन मित्रों के जीवन के साथ उनके अनुभवों एवं कुछ वास्तविक घटनाओं को मित्रों के साथ साझा किया जो कि बहुत ही प्रेरणादायक थी।



प्रार्थना सभा में भाग लेने वाले प्रतिभागी

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.11. 2020
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)